हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 7 | अंक 18 | जनवरी 2016 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय ✍

नौ वर्षीय शिक्षा !

शिक्षा-पद्धति में हमेशा बदलाव होता रहता है,यह कोई नई बात नहीं है । आज शिक्षा के क्षेत्र में हम उसी मोड़ पर खड़े हैं, उस बदलाव के इंतज़ार में । जब तक हम उस चीज़ के आदी नहीं हो जाते तब तक हमें वह बदलाव अजीब सा लगेगा । आज मॉरीशस में शिक्षा का स्तर पहले के मुकाबले काफ़ी ऊँचा हो गया है जो हमारे लिए गर्व की बात है ।

आज नौ वर्षीय शिक्षा की बात बहुत ज़ोर-शोर से चल रही है जो वर्ष 2017 से वह लागू हाने जो रही है । यह मॉरीशसीय शिक्षा-प्रणाली में एक बहुत बड़ा कदम है । यह बदलाव प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल के शिक्षण में आएगा । इसकी तैयारी शिक्षा मंत्रालय कर रहा है और शिक्षा मंत्री शिक्षण से तालुक रखनेवाले अधिकारियों से सम्पर्क रख रही हैं तथा विचारों का आदान-प्रदान भी हो रहा है ।

नौ वर्षीय शिक्षा योजना की बात पहले भी हुई है, लेकिन आज यह एक नया रूप लेकर आ रही है । इसके लागू होने से भारतीय भाषाओं के अन्तर्गत हिंदी भाषा को बढ़ावा मिल पाएगा क्योंकि नौवीं कक्षा तक शिक्षा अनिवार्य रहेगा । आज जो सी. पी. ई. परीक्षा हो रही है वह एक नए नाम (पी.एस.ए.सी.) से जानी जाएगी । इसका मतलब है कि छह वर्षों के बाद छठी कक्षा की परीक्षा बराबर चलती रहेगी, लेकिन एक नया नाम लेकर । खैर नाम में क्या रखा है ! यह बात तो सही है कि छह वर्षों के बाद छात्र प्राथमिक स्कूल से राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा देकर ही माध्यमिक स्कूल में कदम रखेंगे । परीक्षा का नाम बदले या कक्षा का, समय के साथ हम उस बदलाव के आदी हो ही जाएँगे । प्रेस से यह जानकारी मिल रही है कि छात्र छठी कक्षा के बाद अपने ही क्षेत्रीय माध्यमिक स्कूल में दाखिला पाएँगे और नौवीं कक्षा की परीक्षा राष्ट्रीय स्तर पर होगी । इसके बाद छात्रों के भविष्य का निर्णय होगा कि वे किस क्षेत्र में अपना शिक्षण जारी रखेंगे ।

हमें विश्वास है कि शिक्षा के क्षेत्र में इस महत्त्वपूर्ण बदलाव से हमारे छात्र-छात्राओं को लाभ होगा तथा उनका भविष्य सुरक्षित रहेगा । ♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

समावर्तन समारोह 2015

हिंदी प्रचारिणी सभा का समावर्तन समारोह 5 दिसंबर को हिंदी भवन के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में भव्य रूप से मनाया गया । उत्सव की मुख्य अतिथि शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन रहीं । अवसर के विशेष अतिथि भारतीय उच्चायोग के कार्यवाहक उच्चायुक्त महामहिम श्री अशोक कुमार जी थे । इलाके के सांसद श्री ओरी जी, पाम्प्लेमूस ज़िला परिषद के अध्यक्ष श्री धीरज सुकर जी, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्य-वाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल तथा अन्य कई गणमान्य अतिथि अपनी उपस्थिति से उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे ।

शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन जी द्वारा शम्भु जी की पुस्तकों का लोकार्पण ।

सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया तथा सभा की वार्षिक गतिविधियों की जानकारी दी । विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल जी ने हिंदी भाषा के पठन-पाठन के महत्व पर बल दिया । अपने भाषण में उत्सव की मुख्य अतिथि शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन ने सभा द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा पुरस्कृत होने वाले छात्रों को बधाई दी ।

सभा हर वर्ष दो महानुभावों को समावर्तन समारोह के अवसर पर सम्मानित करती है । इस वर्ष श्रीमान लक्ष्मी प्रसाद मंगरू तथा श्रीमती सूचिता देवी चमरू को हिंदी भाषा के प्रचार में योगदान के लिए 'हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान' से विभूषित किया गया ।

इसी अवसर पर सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु की तीन बाल-पुस्तकों का शिक्षा मंत्री के हाथों लोकार्पण हुआ जिनमें एक बाल कहानी संग्रह, एक बाल कविता संग्रह और एक बाल एकांकी संग्रह था ।

हमारे लिए यह गर्व की बात है कि सभा के संस्थापकों में से आज जीवित 103 वर्ष के श्री बृजलाल धनपत जो सभा के मान्य प्रधान भी हैं ; अपनी उपस्थिति से उन्होंने हमारे उत्सव में चार चाँद लगा दिए ।

अंत में छठी तथा प्रवेशिका परीक्षाओं में प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण किए गए । ♦

"भाषा ही राष्ट्र , साहित्य और संस्कृति का निर्माण करती है ।"
– प्रेमचन्द

समावर्तन समारोह 2015 के अवसर पर लिए गए चित्र ।

"आज दुनिया में हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है ।" – *भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी*

"हिंदी अत्यंत उन्नत और श्रेष्ठ भाषा है और इसमें कोई कमी नहीं है ।" – *मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान*

भारतीय उच्चायोग द्वारा सभा को आर्थिक सहयोग प्राप्त ।

हिंदी प्रचारिणी सभा को इस वर्ष दूसरी बार भारतीय उच्चायोग से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ । वर्ष के आरम्भ में ही पच्छतहर हज़ार के उपकरण प्राप्त हुए । इस बार समावर्तन समारोह के अवसर पर उपस्थित भारतीय उच्चायोग के कार्यवाहक उच्चायुक्त श्री अशोक कुमार के हाथों एक लाख पंद्रह हज़ार रुपये प्राप्त हुए ।

सभा के प्रधान को चेक प्रदान करते हुए कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अशोक कुमार ।

हम सभा की ओर से महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल जी को तथा भारत सरकार को भी हार्दिक धन्यवाद देते हैं । हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु यह हमारी सभा के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

मॉरीशस में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु भारतीय उच्चायोग ने हिंदी प्रचारिणी सभा को सहयोग देकर हमारा हौसला बुलंद कर दिया । इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि भारतीय उच्चायोग की ओर से हमें इतना आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है । एक बार हम फिर भारतीय उच्चायोग को उनके सहयोग के लिए आभार प्रकट करते हैं । साथ ही हम विश्व हिंदी सचिवालय को भी सहयोग के लिए धन्यवाद देते हैं ।◆

पालमा, कात्र-बोर्न में उत्तमा (साहित्य रत्न) के छात्रों के लिए एक उपाधिग्रहण समारोह का आयोजन ।

वृन्दावन सभा तथा वृन्दावन सार्वजनिक मंदिर समिति के मिले-जुले सहयोग से उत्तमा (साहित्य रत्न) के छात्रों के लिए एक उपाधिग्रहण उत्सव का आयोजन 13 दिसंबर को दस बजे मंदिर के सभागार में हुआ । यह विद्यालय हिंदी प्रचारिणी सभा से सम्बद्ध है । मुख्य अतिथि देश की शिक्षा मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री रहीं । साथ में हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु भी आमंत्रित थे ।

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद एक स्मारिका पत्रिका का भी शिक्षा मंत्री के कर कमलों द्वारा विमोचन हुआ ।

शिक्षा मंत्री ने अपने भाषण में आयोजन समिति को तथा पुरस्कृत छात्र-छात्राओं को बधाई दी ।

शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन के साथ हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु तथा वृन्दावन सभा के प्रधान श्री रामदुर और श्री सुबारा ।

हम हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से उन सभी उत्तीर्ण छात्रों को बधाई देते हैं तथा वहाँ के आयोजक श्री सुबारा तथा श्री रामदुर को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई प्रदान करते हैं । छात्रों को प्रोत्साहित करने हेतु ऐसा आयोजन अन्य संस्थाओं के लिए प्रोरणादायक है । ◆

दिसंबर
खंड १७ अंक ७

आक्रोश

हिन्दी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों में मोरिशस के लेखकों,कवियों की रचनाएँ निर्धारित

हिन्दी प्रचारिणी सभा ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय को कार्यरूप दिया है अर्थात मोरिशस के लेखकों तथा कवियों की रचनाओं का सभा द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों में निर्धारित किया है। स्थानीय रचनाकारों के लिए अत्यन्त प्रोत्साहन की बात है।

मोरिशस के रचनाकारों की रचनाओं को पाठ्य पुस्तकों में निर्धारित क्यों ? पहले से मात्र भारतीय हिन्दी लेखकों,कवियों तथा इतिहासकारों की रचनाएँ ही सम्मिलित थीं।सरल उत्तर यही है कि मोरिशस के लेखक-कवि भी अब उच्चस्तरीय रचनाएँ करने में सक्षम हैं और दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सभा ने स्थानीय रचनाकारों को प्रोत्साहन देना चाहा है और जहाँ पाठ्य पुस्तक लेखन की बात है वहाँ यह भी कहना उपयुक्त है कि लम्बे अर्से से पढ़ाते हुए अध्यापक गण पाठ्य पुस्तक लेखन के विधिविधान में काफी अनुभव प्राप्त कर चुके हैं । प्राय: अध्यापक -अध्यापिकाएँ ही हिन्दी के लेखक-कवि हैं और कई बार तो भारत से आए कई पाठ्य पुस्तक लेखक विशेषज्ञों द्वारा लेखन कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं जिन से पाठ्य पुस्तक लेखन के शिल्प से अवगत हुए । मोरिशसीय हिन्दी साहित्यकारों से देश के पाठकों को परिचित कराना ये भी उद्देश्यों में से एक है ।

प्रयाग इलाहाबाद से परिचय से उत्तमा तृतीय खण्ड तक की जो परिक्षाएँ ली जाती हैं उनमें भारतीय साहित्यकारों की पुस्तकें तो रहेंगी ही । उन निर्धारित पाठ्य पुस्तकों पर प्रश्न पत्र होंगे । प्रेमचंद, तुलसी, सूर, मीरा, जायसी, मैथिलिशरण गुप्त, निराला, महादेवी वर्मा, पंत, जैनेन्द्र कुमार आदि भारतीय साहित्यकारों की पुस्तकों से परीक्षार्थी वंचित नहीं होंगे । उनकी रचनाएँ भी पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित हैं।

हिन्दी प्रचारिणी सभा द्वारा निर्धारित ये पाठ्य पुस्तकें हैं -

1:मोरिशस में खड़ी बाली, हिन्दी की व्यवस्था और प्रचार लेखक हैं डॉ. लक्ष्मी प्रसाद रामयाद ओ.बी.ई. अनुवाद श्री अजामिल माताबदल [परिचय परीक्षा के लिए]

2:हिन्दी काव्य प्रवेश [प्रवेशिका परीक्षा के लिए] संकलन एवं संपादन श्री अजामिल माताबदल इस संग्रह में कवियों और कवियित्रियों की कविताएँ संकलित हैं। कवि हैं- डॉ. ब्रजेन्द्र कुमार भगत , जनार्दन कालिचरण ,हरिनारयण सीता, डॉ. मुनिश्वरलाल चिंतामणि, इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ,डॉ. हेमराज सुन्दर, अजामिल माताबदल, धनराज शंभु तथा जय जीऊत।

कवियित्रियाँ हैं- कल्पना लालजी , राजवन्ती मातादिन 'नेहो' और रश्मि लालबिहारी।

3:मोरिशस की सुगम हिन्दी कहानियाँ-कहानिकार हैं-डॉ. लक्ष्मी प्रसाद रामयाद,पंडित धर्मवीर घूरा, भानुमति नागदान, जनार्दन कालिचरण, डॉ. मुनीवरलाल चिंतामणि, इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, देवननन हेमराज, डॉ. अभिमन्यु अनत ,सोनालाल नेमधारी, सत्यवती जगमोहन, अजामिल माताबदल, रामदेव धुरन्धर, धनराज शम्भू, राज हीरामन तथा जय जीऊत।

4:सुगम हिन्दी व्याकरण

लेखक टहल रामदीन-यह हिंदी व्याकरण तथा उसके प्रमुख तत्वों जैसे वर्ण भेदों,शब्द भेदों तथा वाक्य भेदों को छात्रों की समझ के लिए सुबोध एवं सुस्पष्ट विधि से प्रस्तुत किया गया है।

5 सुगम संस्कृत-लेखिका-श्रीमती मालती ओकल तथा सहयोगी श्री हनुमान दुबे गिरधारी।संस्कृत भाषाओं की जननी मानी जाती है।हमारे सारे प्राचीन धर्मग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे हुए हैं। आधुनिक युग में भी संस्कृत को पढ़ना और पढ़ाना बहुत आवश्यक है। हमारी हिंदी साहित्यिक परीक्षाओं के लिए संस्कृत को शामिल कर एक उचित कदम उठाया गया है।संस्कृत की लिपि तो देवनागरी है।

सुगम संस्कृत में शब्द बोध व वाक्य सरल करके बताया गया है। संस्कृत हिंदी अनुवाद अधिक सुगम बना देता है।

6 परिचय परीक्षा में श्री धनराज शंभु जी के कहानी संग्रह की कहानियाँ निर्धारित हैं।

हम आशा करते हैं कि हिंदी प्रचारिणी सभा अन्य साहित्यिक परीक्षाओं जैसे प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा में भी स्थानीय रचनाकारों की रचनाएँ सम्मिलित करने पर विचार करेगी।

डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ
मान्यप्रधान हिंदी लेखक संघ

हम हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी को इस प्रेरणादायक लेख के लिए आभार प्रकट करते हैं । हम आपके सुझावों पर अवश्य ही विचार करेंगे । *(लेख- आक्रोश पत्रिका से साभार)*

पुरस्कृत होने वाली छात्राओं के साथ शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु वृन्दावन सभागार में ।

इतिहास के पन्नों से .....

श्री नेमनारायण गुप्त

हिंदी प्रचारिणी सभा के अनन्य सेवक श्री नेमनारायण गुप्त जी को भूल जाना नामुमकिन है। श्री नेमनारायण गुप्त जी मॉरीशस में हिंदी के आदिगुरु माने जाते हैं। उन्होंने देश-भर में हिंदी स्कूल खुलवाए तथा सैकड़ों लोगों को हिंदी सिखाई।

उनका जन्म 1894 में हुआ था। वे धारा-नगरी (अभी लोंग माउंटेन) के ही निवासी थे। उनका निवास स्थान हिंदी भवन के बिल्कुल बगल में था।

क्रेवकेर में सभा द्वारा कन्या पाठशाला खोली गई। ये प्रथम व्यक्ति रहे जो सभा द्वारा हिंदी-शिक्षक नियुक्त हुए थे। इन्होंने जी-जान से हिंदी भाषा की सेवा की। केवल अपने गाँव में ही नहीं बल्कि अन्य जगहों में बैठका खुलने के बाद वे उन पाठशालाओं में पढ़ाने तथा परीक्षा करवाने जाते रहे।

लोग उन्हें आदर और प्रेम से गुरु जी कहा करते थे। गुरु जी परीक्षाओं का संचालन करते और प्रमाणपत्र प्रदान करते थे। वे शिक्षकों का मार्ग दर्शन करते थे। उस समय बड़ी संख्या में स्कूलों को सभा से सम्बद्ध कराने का श्रेय नेमनारायण गुप्त जी को जाता है।

सभा द्वारा संचालित सायंकालीन पाठशालाओं की देख-रेख के लिए वे गाँव-गाँव जाते थे। यह कार्य संभालते हुए कभी-कभी उन्हें दूर गाँव में परिवार के यहाँ रात गुज़ारनी पड़ती थी। वे आजीवन हिंदी की सेवा करते रहे। सभा द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित 'दुर्गा' पत्रिका में वे 'केशवदास' नाम से लिखते थे। इनकी कहानियों में गोरों द्वारा किए जा रहे अत्याचार के प्रति आक्रोश की भावना दिखती थी।

आज हिंदी भवन-लोंग माउंटेन में इनकी निःस्वार्थ सेवा की याद में इनके नाम का एक पुस्तकालय है जो "नेमनारायण गुप्त पुस्तकालय" से जाना जाता है। इन्होंने अपनी सेवा से हिंदी भाषा की मशाल को जलाए रखा। इनका निधन 1956 में हुआ। इनके द्वारा शुरू किया हुआ कार्य आज फूल-फल रहा है और हिंदी बैठका से विश्वविद्यालय तक पहुँच गयी है। आज छात्र बी. ए. ; एम. ए. तथा पी. एच. डी. की उपाधि मॉरीशस में ही पाने लगे हैं। ◆

हिंदी भवन में उपलब्ध पुस्तकें

प्राथमिक : सुगम हिंदी (कक्षा I से VI तक)

प्रवेशिका : 1. सुगम हिंदी व्याकरण
2. मॉरीशस की सुगम हिंदी कहानियाँ
3. हिंदी काव्य प्रवेश
4. सुगम संस्कृत

परिचय : मॉरीशस में खड़ी बोली हिंदी की व्यवस्था और प्रसार

मध्यमा : सुदामा चरित (से उद्धृत कविताएँ)

(फोन : 2452112)

आधारशिला के विद्वानों का आगमन।

श्री रामदेव धुरंधर, प्रो. हरि मोहन, डॉ. सुकेश कुमार, डॉ. दिवाकर भट्ट तथा श्री यंतुदेव बुधु।

ता. 3 नवम्बर की शाम 4 बजे हिंदी भवन के प्राँगन में एक बार फिर नैनिताल के आधारशिला के विद्वतगण पधारे। उसी दिन मॉरीशस में आए हुए जी. एस विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद के कुलपति डॉ. सुकेश कुमार, उप-कुलपति प्रो. हरि मोहन तथा वहीं की उप-अध्यक्षा डॉ. गीता यादव भी उपस्थित रही।

डॉ. दिवाकर भट्ट आधारशिला फ़ाउंडेशन के निदेशक के साथ-साथ आधार-शिला पत्रिका के मुख्य संपादक भी हैं। आज मॉरीशस के कई साहित्यकार अपनी पुस्तकें आधारशिला प्रकाशन से ही छपवाते हैं। डॉ. दिवाकर की यह टोली पूरे विश्व की यात्रा कर हिंदी सम्मेलनों के ज़रिए हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार का कार्य करने में लगे हैं। अब डॉ. दिवाकर मॉरीशस के लिए नए नहीं हैं। उस अवसर पर हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से उनको हिंदी-सेवा के लिए प्रधान श्री यंतुदेव बुधु के हाथों एक सम्मान-पट प्रदान किया गया। ◆

हिंदी प्रचारिणी सभा की वर्ष 2016 की सम्भावित गतिविधियाँ।

1. विद्यालय प्रवेश	शनिवार 9 जनवरी
2. ज़िलाध्यक्षों की बैठक	शनिवार 30 जनवरी
3. कार्यशाला (बैठका-संचालक)	शनिवार 13 फरवरी
4. बृहद् अधिवेशन	शनिवार 26 मार्च
5. कविता वाचन प्रतियोगिता	प्रथम चरण 14 मई अंतिम चरण 11 जून
6. परीक्षाओं का आवेदन	क. प्रवेशिका 30 अप्रैल ख. सम्मेलन 28, 29 मई ग. अतिरिक्त 2 जुलाई
7. स्थापना दिवस/कवि सम्मेलन	शनिवार 18 जून
8. कार्यशाला (उत्तमा III)	शुक्रवार 5 अगस्त
9. श्रुतिलेख प्रतियोगिता	अगस्त (स्कूल की छुट्टी में)
10. हिंदी दिवस	शनिवार 13 अगस्त
11. वाचन प्रतियोगिता	अगस्त (स्कूल की छुट्टी में)
12. परीक्षाएँ	क. छठी : शनिवार 17 सितम्बर ख. प्राथमिक : 15 अक्टूबर से ग. प्रवेशिका : 12 नवंबर घ. सम्मेलन : 19,20,21,22,23 दिसंबर
13. समावर्तन समारोह	शनिवार 10 दिसंबर